६. निसर्ग वैभव

– सुमित्रानंदन पंत

पूरक पठन

किसी विषय पर स्वयं स्फूर्त भाषण दीजिए :–

संभाषणीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● दस-पंद्रह भिन्न विषयों की चिट बनाइए ● विद्यार्थियों को चिट पर लिखित विषय पर विचार करने के लिए कुछ समय दें । ● उस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहें ।

कितनी सुंदरता बिखरी
प्राकृतिक जगत में, ईश्वर,
टपक रही गिरि-शिखरों से झर,
लोट रही घाटी में
लिपटी धूप छाँह में निःस्वर !

अनिल स्पर्श से पुलकित तृण दल,
बहती सीमाहीन
श्लक्ष्ण संगीत स्रोत-सी
अहरह वन-भू मर्मर !

फूलों की ज्वालाएँ
आँखें करतीं शीतल,
मुकुल अधर मधु पीते
गुंजन भर मधुकर दल !
तितली उड़तीं,
दूर, कहीं पल्लव छाया में
रुक-रुक गाती वन प्रिय कोयल !

× × ×

लेटी नीली छायाएँ
कृश रवि किरणों में गुंफित,
दुरारोह भातीं ढालें,
निश्चल तरंग-सी स्तंभित !
स्वर्ण-भाल गिरी सर्वप्रथम
करती ऊषा अभिनंदन,
साँझ यहीं सोती छिप,
निर्जन में कर संध्यावंदन !

परिचय

जन्म : २० मई १९०० कौसानी (उ.खं.) **मृत्यु** : २८ दिसंबर १९७७
परिचय : पंत जी छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं । वे प्रकृति के साथ-साथ मानव सौंदर्य और आध्यात्मिक चेतना के भी कुशल कवि थे ।
प्रमुख कृतियाँ : वीणा, गुंजन, पल्लव, ग्राम्या, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चाँद आदि (काव्य संग्रह), हार (उपन्यास), साठ वर्षः एक रेखांकन (आत्मकथात्मक संस्मरण)

पद्य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, हृदय की कोमल अनुभूतियों का साकार रूप कविता है ।

प्रस्तुत रचना में प्राकृतिक वैभव, सौंदर्य, निसर्गरम्य अनुभूति-उदात्तता, आध्यात्मिकता, अद्भुत भाषा प्रभाव एवं वर्णन शैली का साक्षात्कार होता है ।

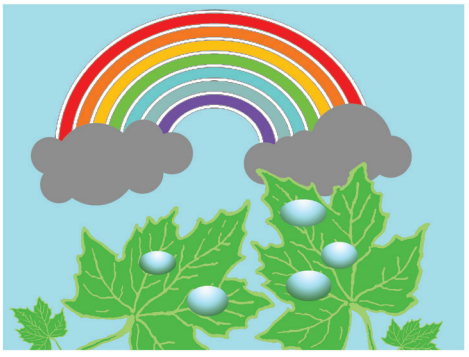

मैं हूँ यहाँ

https://youtu.be/CTWrBxcysOU

अपलक तारापथ शशिमुख का
बनता लेखा दर्पण,
यहीं शैल कंधों पर सोया
जगता गंध समीरण !

सद्यः स्फुट सौंदर्य राशि
सम्मोहन भरती मन में,
कितना विस्मयकर वैचित्र्य
भरा पर्वत जीवन में !

खग चखते फल,
कुतर रहीं गिलहरियाँ कोंपल,
वन-पशु सब लगते प्रसन्न
परिचित मरकत आँगन में !

स्वाभाविक,
यदि मुझे याद आता
ईश्वर इस क्षण में !
जड़ जग इतना सुंदर जब
चेतन जग में क्या कारण
रहता अहरह जो
विषण्ण जीवन मन का संघर्षण ?

मनुज प्रकृति का करना फिर
नव विश्लेषण, संश्लेषण,-
ईश्वर का प्रतिनिधि नर,
अभिशापित हो उसका जीवन ?
लगता, अपनी क्षुद्र अहंता ही में
सीमित, केंद्रित,
छिन्न हो गया विश्व चेतना से
मानव मन निश्चित !

—०—

('पतझड़' से)

पठनीय

निम्न शब्द पढ़िए । शब्द पढ़ने के बाद जो भाव आपके मन में आते हैं वे कक्षा में सुनाइए ।

नदी, पर्वत, वृक्ष, चाँद

शब्द संसार

श्लक्ष्ण (वि.) = मधुर
अनिल (पुं.सं.) = पवन
अहरह (क्रि.वि.) = प्रतिदिन
मुकुल (स्त्री.सं.) = कली
शैल (पुं.सं.) = पर्वत
समीरण (पुं.सं.) = पवन
मरकत (पुं.सं.) = पन्ना (एक रत्न)
निर्जन (वि.) = वीरान
अपलक (वि.) = बिना पलक झपकाए
वैचित्र्य (भा.सं.) = अनोखापन

कल्पना पल्लवन

किसी कार्यालय में नौकरी पाने हेतु साक्षात्कार देने वाले और लेने वाले व्यक्तियों के बीच होने वाला संवाद लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : –

(क) संजाल :

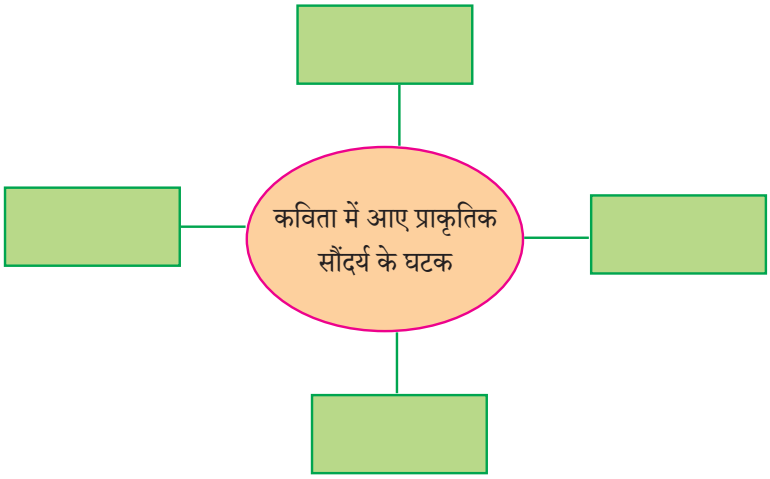

(ख) कविता की पंक्तियों को उचित क्रमानुसार लिखकर प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :

(१) परिचित मरकत आँगन में !
(२) अभिशापित हो उसका जीवन ?
(३) अनिल स्पर्श से पुलकित तृणदल,
(४) निश्चल तरंग-सी स्तंभित !

प्रवाह तख्ता

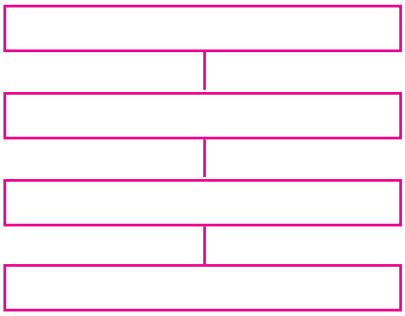

श्रवणीय

नीरज जी द्वारा लिखित कोई कविता यू ट्यूब पर सुनिए और उसके केंद्रीय भाव पर चर्चा कीजिए ।

(२) कविता द्वारा प्राप्त संदेश लिखिए ।

(३) कविता के तृतीय चरण का भावार्थ सरल हिंदी में लिखिए ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित मुहावरे/कहावतों में से अनुपयुक्त शब्द काटकर उपयुक्त शब्द लिखिए :

मुहावरे - कहावतें

१. टोपी | पहनना – टोपी | पहनना

२. कमर | बंद | करना – ☐ ☐ ☐

३. गेहूँ | गीला | होना – ☐ ☐ ☐

४. नाक | की | किरकिरी | होना – ☐ ☐ ☐ ☐

५. धरती | सर | पर | उठाना – ☐ ☐ ☐ ☐

६. लाठी | पानी | का | बैर – ☐ ☐ ☐ ☐

8PB5C4

रचना बोध

.....

.....

.....